SHRI B. S. MURTHY : The N.D.M.C. borrows the services of engineers as and when they need them., therefore there was no possibility of asking the State Government that they would want an expert on such and such a subject and also a Scheduled Caste. Now the N.D.M.C. is thinking of forming its own cadres. As 1 have stated earlier, they wanted to have in a panel of 11 candidates for the three Assistant Engineers' posts and one has been reserved for a Scheduled Caste.

TRANSFER OF CHANDNI CHOWK KOTWAL[1] DELHI TO GURDWARA SLSGUNJ

•473. SARDAR NARINDAR SINGH BRAR
SARDAR GURCHARAN SINGH TOHRA :

Will the Minister of HEALTH AND FAMILY PLANNING AND WORKS, HOUSING AND URBAN DEVELOPMENT be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the Delhi Administration has recommended to the Union Government to hand over the part of the Chandni Chowk Kotwali, Delhi to the Sis Gunj Gurdwara free of cost keeping in view its sacred character and sentiments of the people;

(b) if so, whether Government propose to return the money already taken from the Gurdwara Sis Gunj Management; and

(c) if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING AND WORKS, HOUSING AND URBAN DEVELOPMENT (SHRI B. S. MURTHY) : (a) and (b) No, Madam.

(c) The terms and conditions for the transfer of the Kotwali building to the Gurdwara Prabandhak Committee were mutually agreed upon between the Gurdwara Prabandhak Committee and the Delhi Administration.

سردار نریندر سنگھ برار : میں منسٹر صاحب سے پوچھنا چاھوں گا کہ جب ایسٹ انڈیا کمپنی آئی تو اس نے بھی آ کر یہ کہا کہ سکھوں کی بے حد قربانیوں کو مد نظر رکھتے ہوئے یہ جو کوتوالی ھے وہ شیشہ گنج کا حصہ ھے تو اس کے بعد کیا وجہ ھے کہ ھماری اپنی حکومت نے اس کو گوردوارے کا حصہ نہیں مانا جب کہ سکھوں کی بے شمار قربانیاں ھیں - اس کے بعد سردار سورن سنگھ اور مسٹر جھا نے سب نے یہ کہا - اس پر بھی اس کوتوالی کے لئے سولہ لاکھ ۳۵ ھزار روپیہ لیا - اس وقت بھی ان لوگوں نے یہ کہا کہ گورنمنٹ کو یہ مفت دینا چاھئے اور یہ روپیہ واپس کر دینا چاھئے -

دوسرا سوال یہ ھے کہ آپ نے ھر جگہ ھر مندر یا مسجد کے سامنے پارک وغیرہ بنایا ھے تو ھمارے گوردوارے کے سامنے ، ھمارے کسی گوردوارے کے سامنے ، اس کو بنانے کے لئے ایسا کوئی قدم نہیں اٹھایا - جو کوتوالی ھے اس کو گوردوارے کا حصہ مانتے ھیں حالانکہ اس کے لئے میوچولی ایگری کیا اور روپیہ دینے کو مانا لیکن اس کے بعد بھی جب کہ پارک، سرائے وغیرہ بنانے کے لئے اور جگہ ایک روپیہ گز پر دیتے ھیں تو اس جگہ کے لئے سولہ لاکھ ۳۵ ھزار روپیہ لینے کی کیا وجہ تھی ؟

†[सरदार नरेन्दर सिह बार : मैं मिनिस्टर साहब से पूछना चाहूंगा कि जब ईस्ट इंडिया कम्पनी आई तो उसने भी आ कर यह कहा कि सिखों की बेहद कुर्बानियों को मद्देनजर रखते हुये यह जो कोतवाली है वह शीशगंज का हिस्सा है तो उसके बाद क्या वजह है कि हमारी अपनी हुकूमत ने इसको गुरुद्वारा का हिस्सा नहीं माना जब कि सिखों की बेशुमार कुर्बानियां हैं। उसके बाद सरदार स्वर्ण सिह, मिस्टर झा, सबने यह कहा। इस पर भी इस कोतवालो के लिये 16 लाख 35 हजार रुपया लिया। उस वक्त भी इन लोगों ने यह कहा कि गवर्नमेंट को यह मुफ्त देना चाहिय और यह रुपया वापस कर देना चाहिये।

[1] The question was actually asked on the Boor of the house by Sardar Narindar Singh Brar.

†] Hindi transli teration.

दूसरा सवाल यह है कि आपने हर जगह, हर मन्दिर या मस्जिद के सामने, पार्क वगैरह बनाया है तो हमारे गुरुद्वारे के सामने, हमारे किसी गुरुद्वारे के सामने, इसको बनाने के लिये ऐसा कोई कदम क्यों नहीं उठाया। जो कोतवाली है उसको गुरुद्वारा का हिस्सा मानते हैं, हालांकि उसके लिये म्युचुअली एग्री किया और रुपया देने को माना, लेकिन इसके बाद भी जब कि पार्क, सराय, वगैरह बनाने के लिये और जगह एक रुपया गज पर देते हैं तो इस जगह के लिये 16 लाख 35 हजार रुपया लेने की क्या वजह थी ?]

سردار نریندر سنگھ برار : میں نے تو آپ سے یہی سوال کیا ھے کہ جو آپ کہہ رھے ھیں کہ بلڈنگ کا پیسہ دیا تو یہ بہت پرانی بلڈنگ ھے آخرکار اس کو گرانا ھی ھے - پربندھک کمیٹی نے مان لیا اس لئے کہ ھمارے پاس سائس لینے کو جگہ نہیں تھی - کوئی سرائے وغیرہ نہیں بنا سکتے تھے ھم مجبور تھے آپ نے نہیں دیا - آپ نے ۱۶ لاکھ ۳۵ ھزار روپیہ مانگا بھی تو میرا کہنا ھے کہ ھماری سینٹرل گورنمنٹ نے سکھوں کے لئے خاص طور پر کیا فراخ دلی دکھلائی ھے جب کہ آپ کے سینیر منسٹر اور سب آدمی کہہ رھے ھیں کہ یہ مفت ملنی چاھئے -

†[सरदार नरेंदर सिंह ब्रार : मैंने तो आपसे यही सवाल किया है कि जो आप कह रहे हैं कि बिल्डिंग का पैसा दिया तो यह जो बहुत पुरानी बिल्डिंग है, आखिरकार उसको गिराना ही है, प्रबन्धक कमेटी ने मान लिया, इसलिये कि हमारे पास सांस लेने को जगह नहीं थी, कोई सराय वगैरह नहीं बना सकते थे, हम मजबूर थे, आपने नहीं दिया, आपने 16 लाख 35 हजार रुपया मांगा भी, तो मेरा कहना है कि हमारी सेंट्रल गवर्नमेंट ने सिखों के लिये खास तौर पर क्या फ़राखदिली दिखलाई है, जबकि आपके सीनियर मिनिस्टर और सब आदमी कह रहे है कि यह मुफ्त मिलनी चाहिये।]

SHRI B. S. MURTHY : As a matter of fact when this 0 .7 acre was agreed to by the Prabandhak Committee, there was no question of selling the land. The Prabandhak Committee agreed to pay the cost of the superstructures worth about Rs. 16 .35 lakhs and it also agreed that if the Government is able to get land free for the construction of Kotwali, there would be no question of charging any money for the land given but if they have to purchase, the Prabandhak Committee agreed to pay the cost.

SHRI B. S. MURTHY : The question does not arise as far as the Central Government is concerned. It is an agreement between the Delhi Administration and the Prabandhak Committee. The present estimated cost of the building is Rs.16.35 lakhs.

سردار نریندر سنگھ برار : میرے سوال کا جواب نہیں دیا - میں نے تو یہ کہا ھے کہ جب آپ کے سینیر منسٹر بھی یہ کہتے ھیں - ملھوترا صاحب اور جھا صاحب بھی یہ کہتے ھیں کہ اس کو مفت دینا چاھئے تو آپ نے کوئی وچار کیا اور اگر نہیں کیا تو کیا وجہ ھے ؟ میں نے یہ پوچھا تھا اس کا جواب آپ نے نہیں دیا -

†[**सरदार नरेंदर सिंह ब्रार :** मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। मैंने तो यह कहा है कि जब आपके सीनियर मिनिस्टर भी हैं, मल्होत्रा साहब और झा साहब भी कहते हैं कि इसको मुफ्त देना चाहिये तो आपने इस पर कोई विचार किया और अगर नहीं किया तो क्या वजह है ? मैंने यह पूछा था, उसका जवाब आपने नहीं दिया।]

SHRI B. S. MURTHY : I am not able to understand it.

SHRI NARINDAR SINGH BRAR : I can repeat it.

श्री के० के० शाह : मैं आपको बताता हूं। आपने कहा कि फोकट में देने में क्या हर्जा है। यह आपका सवाल है। तो दिल्ली

literatkn.

एडमिनिस्ट्रेशन ने प्रबन्धक कमेटी के साथ समझौता किया। आज तक कहीं पर ऐसा नहीं हुआ है कि खड़े हुये मकान को गिरा दें अगर उस जगह पर किसी के बारे में कोई मेमोरियल करना हो, फिर भी यह मंजूर किया गया कि मकान की कीमत हम दे देते हैं कलेक्शन कर के। तो यह एग्रीमेंट हुआ कि अच्छा हो कोतवाली का मकान आप दे दें, दूसरी जगह कोतवाली बना देंगे। प्रबन्धक कमेटी जिसमें हमारे अकाली दोस्त मेजारिटी में हैं इनके साथ समझौता हुआ तो फिर आप क्यों परेशान हैं।

میں : سردار نریندر سنگھ برار

پریشان نہیں ہوں – میرے سوال کا جواب آپ نے نہیں دیا – لک ہیر – میں نے یہ سوال نہیں کیا – میں تو یہ کہتا ہوں کہ سردار سورن سنگھ جی صاحب نے یہ کہا کہ ان کو مفت دینا چاہئے آپ کے منسٹر بھی ہمارے ساتھ ہیں – تو اس کے بارے میں آپ نے کیا وچار کیا – یہ میرا سوال ہے –

†[**सरदार नरेंदर सिंह ब्रार** : मैं परेशान नहीं हूं। मेरे सवाल का आपने जवाब नहीं दिया। लुक हीयर, मैंने यह सवाल नहीं किया। मैं तो यह कहता हूं कि सरदार स्वर्ण सिंह, झा साहब, सबने यह कहा कि उनको मुफ्त देना चाहिये। आपके सीनियर मिनिस्टर भी हमारे साथ हैं। तो उसके बारे में आपने क्या विचार किया? यह मेरा सवाल है।]

श्री के० के० शाह : आपस आपस में हुआ समझौता किसी की ओपीनियन से ज्यादा महत्व का है, ऐसा मैं मानता हूं।

डा० भाई महावीर : महोदया, इस समझौते की बात कही गई है, यह ठीक है कि समझौता हुआ और उसके अन्तर्गत साढ़े सोलह लाख रुपया सरकार को प्रबन्धक कमेटी की तरफ से दिया गया है, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या यह सच है कि आज से सात-आठ महीने पहले दिल्ली की एग्जीक्यूटिव कौंसिल ने इस बात का प्रस्ताव किया कि जितना रुपया लिया गया है वह रुपया वहां पर एक नेशनल मेमोरियल बनाने के लिये सरकार कांट्रीब्यूशन के तौर पर दे दे, समझौते की जो धारायें हैं उनका सम्मान रहे परन्तु जैसे कि ग़ालिब मेमोरियल के लिये 16 लाख रुपया दिया गया वैसे दे दें, अब ग़ालिब का जो स्थान है वह हम जानते हैं, ग़ालिब ने जो कुछ किया है, राष्ट्र के संघर्ष में जो कुछ ग़ालिब की देन है, उसको अलग रखिये, परन्तु इस स्थान का एक बड़ा ऐतिहासिक महत्व है और उस महत्व को ध्यान में रखते हुये सरकार अगर 16 लाख रुपया ग़ालिब के लिये दे सकती है तो इसके लिये भी दे सकती है कि केन्द्र के लिये राष्ट्रीय स्फूर्ति का एक स्मारक खड़ा हो सके। तो जो प्रस्ताव एग्जीक्यूटिव कौंसिल ने किया था क्या सरकार ने उस पर विचार किया है और अगर किया है तो क्या फैसला किया है और अगर उसको अस्वीकार किया है तो क्यों किया है?

श्री के० के० शाह : 11 फरवरी के रोज ऐसा प्रस्ताव पास हुआ ऐसी हमें खबर मिली लेकिन आज तक वह प्रस्ताव मेरे यहां नहीं पहुंचा है। एजुकेशन मिनिस्ट्री में शायद भेजना होगा ऐसा सोच कर के नहीं भेजा होगा, लेकिन मैंने एजुकेशन मिनिस्ट्री में भी तलाश किया, कोई पक्की तो नहीं लेकिन ओरल इंफार्मेशन मिली है, आई स्टैंड करेक्टेड कि अभी तक यहां पर भी नहीं पहुंचा है और जब पहुंचेगा तो इस पर जरूर सोचा जायेगा।

डा० भाई महावीर : मैं यह जानना चाहता हूं . . .

THE DEPUTY CHAIRMAN : No more.

डा० भाई महावीर : वह प्रस्ताव जो आपके पास आये तो उस पर आप विचार करने के लिये तैयार हैं।

श्री लोकनाथ मिश्र : वह तो उन्होंने कहा।

†[ ] Hindi transliteration.